vkpk;l gtkjh i:lkn f}onh] Hkxorh pj.k oekl ,o ve'ryky ukxj Le'fr lekjkg fnukd 04 flrEcj] 2025

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा **vkpk;l gtkjh i:lkn f}onh] Hkxorh pj.k oekl ,o ve'ryky ukxj** स्मृति समारोह के शुभ अवसर पर दिन गुरुवार 04 सितम्बर, 2025 को एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हिन्दी भवन के निराला सभागार लखनऊ में पूर्वाह्न 10.30 बजे से किया गया।

दीप प्रज्वलन, माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, पुष्पार्पण के उपरान्त वाणी वंदना श्री सरबजीत मारवा द्वारा प्रस्तुत की गयी।

lEekuh; vfrfFk& डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह, श्री गोपाल सिन्हा एवं डॉ0 अनिल रस्तोगी का स्वागत स्मृति चिह्न भेंट कर डॉ0 अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा किया गया।

MkO ;kxUn irki flg u dgk& आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी अपनी रचनाओं में लोक व शास्त्र का समन्वय करते हैं। उनमें समन्वय की विराट चेष्टा थी। द्विवेदी जी गंभीर चिंतक थे। द्विवेदी का जीवन काफी संघर्षमय था। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीर के साहित्य को महत्वपूर्ण मानते हैं। कबीर व नाथ सम्पदाय पर हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी लेखनी चलाई। ''अशोक के फूल'' व ''कुटज'' उनके निबन्धों में प्रमुख हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी में किसी भी विषय को विस्तार दने की क्षमता थी। कबीरदास पर लिखी उनकी रचना ''कबीर'' काफी प्रसिद्ध रही। ''बाणभट्ट की आत्मकथा'' उपन्यास साहित्यिक जगत में काफी महत्वपूर्ण है। द्विवेदी की रचनाओं में समन्वय व आत्मसात के तत्वों का समावेश है।

Jh xkiky flUgk u dgk& भगवतीचरण वर्मा कहानीकार, उपन्यासकार व कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं। भगवतीचरण वर्मा ने अपनी साहित्यिक रचनाओं की शुरूआत काव्य से की। बाल्यकाल से ही उन्होंने काव्य रचना करनी प्रारम्भ कर दी थी। उनकी पहचान मूलतः छायावादी कवि के रूप में है। भगवतीचरण वर्मा की ''भैंसा गाड़ी'' कविता काफी चर्चित रही। ''चित्रलेखा'' उपन्यास ने उनकी कीर्ति को आगे बढ़ाया। ''टेढ़े–मेढ़े रास्ते'', ''रेखा'', ''सीधी सच्ची बातें'' आदि प्रमुख रचनाओं में हैं। ''भूले बिसरे चित्र'' उपन्यास को साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला। भगवतीचरण वर्मा जी ने कई फिल्मों में पटकथा भी लिखी। भगवतीचरण वर्मा जी में देश प्रेम भरा हुआ था। वे राज्य सभा सदस्य भी बनाये गये थे।

MkO vfuy jLrksxh u dgk& अमृतलाल नागर जी ने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई। नागर जी ने अपनी साहित्यिक यात्रा काव्य से शुरू की थी। धीरे–धीरे साहित्य की गद्य विधा में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया। नागर जी ने बड़े ही रोचक बाल साहित्य की रचना की। वे कुशल सम्पादक थे। उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान था। ''गदर के फूल'' रचना में स्वतंत्रता संग्राम की झलक मिलती है। नागर जी की मूल पहचान उनके उपन्यासों से उन्हें मिली। अमृतलाल नागर में कहानी को गढ़ने की कला थी। वे सृजनशील साहित्यकार थे। ''मानस का हंस'' उपन्यास को साहित्यिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हैं। ''मानस का हंस'' उपन्यास में गोस्वामी तुलसीदास जी के जीवन चरित्र को नागर जी ने सुन्दर ढ़ंग से चित्रित किया है। नागर जी को विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत भी किया गया। नागर जी ने नाटकों के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।

इस स्मृति समारोह के अवसर पर श्री राहुल ने अमृतलाल नागर की ''नटखट खरगोश'' व पद्यकथा ''सात भाई चम्पा'', सुश्री अनमोल शर्मा ने भगवती चरण वर्मा की कहानी ''वरना हम भी आदमी थे काम के'', सुश्री सरिता गिरि ने भगवती चरण वर्मा की कविता ''सीमाओं से मोह'', श्री

देवेन्द्र सिंह ने हजारी प्रसाद द्विवेदी की कहानी ''मंत्र–तंत्र'' एवं सुश्री सौम्या मिश्रा ने हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध ''अब कुछ कहिबे नाहिं'' का पाठ किया।

Jh vke idk'k fl g] fo'k"k lfpo ¼Hkk"kk½ u dgk& मुस्कुराहट से कई समस्याओं का समाधान निकल सकता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबंध रचना ''कुटज'' काफी सराहनीय रचना है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, भगवतीचरण वर्मा एवं अमृतलाल नागर ये तीनों विभूतियाँ साहित्य जगत में विशिष्ट स्थान रखती हैं। इन साहित्यकारों ने अपना पूरा जीवन साहित्य के लिए समर्पित कर दिया।

Mk0 vferk nc] i/kku lEiknd] m0i0 fgUnh lLFkku द्वारा कार्यक्रम का संचालन एवं संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वत्तजनों एवं मीडिया कर्मियों का आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष डॉ0 शंभुनाथ को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी साथ ही विद्वानों की सभा ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

————————————————